 ISSN 2455-0310

अलगाव सिद्धांत

मार्क्सवादी दृष्टिकोण

प्रमोद कुमार पाण्डेय
शोधार्थी
शांति निकेतन , कोलकाता

अलगाव के सिद्धांत मे मार्क्सवादी दृष्टिकोण को जानने के लिए हमें सर्वप्रथम मार्क्सवादी दृष्टिकोण को समझना होगा।

कार्ल मार्क्स (Karl Marx) [1818-1883ई.]:-

मार्क्स का जन्म 5 मई 1818 ई. में जर्मनी के प्रशिया क्षेत्र के 'राइन' प्रांत के अंतर्गत स्थित ट्रायर नागा र मरीन एक सम्पन्न परिवार में हुआ। अपने क्रांतिकारी व्यक्तव्यों और लेखों के कारण इन्हे जर्मनी छोड़कर पेरिस जाना पड़ा और आगे वहाँ से हालैंड और लंदन। इंका परिचय लंदन में फ्रेडरिख एंजिल्स से हुआ। दोनों ने मिलकर **कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो** 1847 में लिखा जो आगे साम्यवादियों के लिए बाइबिल सिद्ध हुआ। इसी बीच **पावर्टी ऑफ फ़िलासोफी** की भी रचना हुई। 1867 में मार्क्स की **दास कैपिटल** पुस्तक प्रकाशित हुई जिसने विश्व भर में तहलका मचा दिया। यह मजदूर वर्ग के लिए वेद कुरनौर बाइबिल सिद्ध हुई। यह पुस्तक सारे साम्यवादी संसार की मार्गदर्शक है। कार्ल मार्क्स ने अपने विचारों से नई दुनिया का निर्माण किया। विश्व की अर्थव्यवस्था पर उनके विचार मौलिक और क्रांतिकारी हैं। मार्क्स की मृत्यु लंदन में 14 मार्च 1883 ई. में हुई।

मार्क्सवाद :-

मार्क्सवाद उस संसार का, जिसमें हम रहते हैं और मानव समाज का, जो उस संसार का एक भाग है, एक सामान्य सिद्धांत है. मार्क्सवाद का नाम कार्ल मार्क्स के नाम पर पड़ा है. **कार्ल मार्क्स** ने **फ्रेडरिक एंगेल्स** (1820-1895) के साथ मिल कर पिछली शताब्दी के मध्य और अंतिम भाग में इस सिद्धांत को विकसित किया. उनकी खोजबीन का उद्देश्य यह पता लगाना था कि मानव समाज का आज जो रूप पाया जाता है, वह ऐसा क्यों है. उसमें परिवर्तन क्यों होते हैं तथा आगे चल कर मनुष्य जाति का किन-किन परिवर्तनों से साक्षात्कार होगा. अपने अध्ययन से वे इस नतीजे पर पहुंचे कि ये परिवर्तन बाह्य प्रकृति में होनेवाले परिवर्तनों की ही भांति अकस्मात नहीं हो जाते, बल्कि कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार होते हैं.

मार्क्स ने इस सामान्य विचार को उस समाज पर-यानी पूंजीवादी ब्रिटेन के समाज पर- लागू किया और इस प्रकार पूंजीवाद के आर्थिक सिद्धांत को खोज निकाला. मार्क्स की सबसे अधिक ख्याति इसी सिद्धांत को लेकर हुई है. परंतु उन्होंने हमेशा इस बात पर जोर दिया कि उनके आर्थिक सिद्धांतों को उनके ऐतिहासिक और सामाजिक सिद्धांतों से अलग नहीं किया जा सकता.

समाज को समझने और बदलने तथा शोषणहीन समाज-व्यवस्था का निर्माण करने के विज्ञान का नाम 'मार्क्सवाद' है। मानव- समुदाय का मूल प्रयत्न आर्थिक या उत्पादन-परक है। इसी के लिए वह श्रम का आधार ग्रहण करता है। मार्क्स का विश्वास था कि जो वर्ग सामाजिक शक्तियों का नियमन करता है, वही राजनीतिक शक्ति का भी आधिष्ठाता होता है।

हमारा समाज:-

जब हम आस पास के समाज पर निगाह डालते हैं तो हमें गैर बराबरी और शोषण ही दिखाई पड़ता है : अमीर और गरीब के बीच, औरत और मर्द के बीच, 'ऊपरी' और 'निचली' जातियों के बीच । इस समाज में हमें जिंदा रहने के लिए होड़ करनी पड़ती है । अक्सर कहा जाता है कि ऐसा समाज 'स्वाभाविक' या 'ईश्वर का बनाया हुआ'है । जब हम पूछते हैं कि ऐसा क्यों है कि जो लोग काम नहीं करते उनके पास तो अथाह संपत्ति है लेकिन जो लोग सबसे कठिन काम करते हैं वे सबसे गरीब हैं तो कहा जाता है कि भगवान की यही मर्जी है; या कि काम न करने वाले अधिक कुशल हैं या ज्यादा मेहनत करते हैं; या कि प्रकृति का नियम ही है कि कुछ लोग कमजोर और कुछ लोग बलवान हों । इसी तरह जब हम पूछते हैं कि हमारे समाज में औरतें मर्दों के अधीन क्यों हैं तो कहा जाता है कि इसका कारण औरतों का 'प्राकृतिक रूप से' कमजोर होना है; या कि उनके लिए बच्चों की देखभाल करना या घरेलू काम आदि करना 'प्राकृतिक' है ।

मार्क्सवाद हमें बताता है कि यह समाज 'प्राकृतिक' या शाश्वत/अपरिवर्तनीय नहीं है । हमेशा से समाज ऐसा नहीं रहा है और इसीलिए हमेशा ऐसा ही नहीं बना रहना चाहिए । समाज और सामाजिक संबंध लोगों द्वारा बनाए हुए हैं और अगर उन्हें लोगों ने बनाया है तो वे इसे बदल भी सकते हैं । पहले कदम के बतौर हमें समाज और सामाजिक संबंधों की प्रकृति को ठीक से समझना होगा । हमें मालिक और मजदूर, पुरुष और स्त्री के आपसी संबंधों को देखना सीखना होगा और इन संबंधों में ऊपर से स्पष्ट लगने वाली चीजों पर सवाल खड़ा करना होगा । समाज ने हमें इन संबंधों के बारे में जो कुछ सिखाया है उसे भुलाना होगा । ऐसे सभी संबंधों के मामले में हमें सतही सच्चाई से आगे बढ़कर गहराई में उतरना होगा ।

पूँजीपति और मजदूर के बीच क्या संबंध है ?

इस संबंध की सही प्रकृति समझना इसलिए कुछ मुश्किल हो जाता है कि सतही तौर पर मजदूर और पूँजीपति दोनों ही पूँजीवादी समाज में बराबर दिखाई पड़ते हैं । इसके बारे में सोचिए: सामंती समाज में सभी जानते कि राजा और उनके रजवाड़ों के हाथ में सारी शक्ति है; किसान और कारीगर अच्छी तरह से जानते थे कि वे पराधीन हैं । दास समाज में गुलाम अच्छी तरह से जानते थे कि उनका मालिक ही उनका स्वामी है । लेकिन आधुनिक पूँजीवादी समाज में कानून की नजर में सबके अधिकार समान हैं । सबको मतदान का समान अधिकार है । मजदूर किसी एक ही मालिक की सेवा करने के लिए मजबूर नहीं है- उसे किसी भी पूँजीपति को अपना श्रम बेचने की आजादी है ।

सबसे आगे बढ़कर पूँजीवादी समाज में लोगों के बीच के सामाजिक संबंध वस्तुओं के बीच सामाजिक संबंध के परदे में छुपे रहते हैं । उदाहरण के लिए ऐसा लगता है कि 'काम' ऐसी वस्तु है जिसकी अदला बदली एक दूसरी 'वस्तु'-पैसा से की जा रही है । काम के बदले दाम सही अदला बदली लगती है अगर'दाम', या मजदूरी ठीक ठाक हो ।

काम के बदले दाम:-

बाजार में धन्नासेठ और मजदूर बराबर के हकदार की तरह मिलते हैं: उनमें से एक खरीदार और दूसरा माल अर्थात श्रम शक्ति को बेचने वाले की तरह होते हैं । बाजार में बेचने वाल पूरी आजादी के साथ अपनी श्रम शक्ति बेचता है; खरीदार पैसा देता है और उस श्रम शक्ति के उपयोग का हक हासिल कर लेता है । ऊपरी तौर पर यानी बाजार के स्तर पर यह अदलाबदली जायज है ।

लेकिन अगर हम बाजार के स्तर को छोड़कर गहराई में उतरें और वहाँ पहुँचें जहाँ उत्पादन होता है और मुनाफ़ा पैदा होता है तो दूसरी सच्चाई नजर आती है ।

एक के पास श्रम शक्ति होती है, दूसरे के पास पूँजी होती है;श्रम शक्ति का एक हिस्सा पूँजी के एक हिस्से (अर्थात मजदूरी) से खरीदा जाता है ।

यदि श्रम और मजदूरी की बीच हुआ यह लेन-देन बिल्कुल बराबरी पर हुआ है, तो इसमें से मुनाफा फिर कहां से आया?

"वह जो पहले पैसे का मालिक था अब पूँजीपति के रूप में अकड़ता हुआ आगे आगे चल रहा है; श्रम शक्ति का मालिक उसके

मजदूर के रूप में उसके पीछे जा रहा है। एक अपनी शान दिखाता हुआ, दाँत निकाले हुए, ऐसे चल रहा है जैसे आज व्यापार करने पर तुला हुआ हो; दूसरा दबा दबा, हिचकिचाता हुआ जा रहा है, जैसे खुद अपनी खाल बेचने के लिए मंडी में आया हुआ हो और जैसे उसे सिवाय इसके कोई उम्मीद न हो कि अब उसकी खाल उधेड़ी जाएगी।"

(दास कैपिटल,खंड 1, भाग 2, अध्याय 6)

मार्क्स ने हमें बताया कि रोजमर्रा चलते रहने वाले इस संघर्ष की वास्तविक वजह क्या है और कैसे उस बुनियाद को ही बदल कर एक नये समाज की नींव रखी जा सकती है। अपने शरीर के बारे में हम अच्छी तरह से जानते हैं लेकिन यह नहीं जानते कि इसके अंदर के अंग कैसे काम करते हैं। जैसे शरीर को जानने के लिए डॉक्टर उसकी चीर फाड़ करते है, उसी तरह से मार्क्स ने पूंजीवादी व्यवस्था की चीरफाड़ कर उसके भीतर की सच्चाई और कार्यप्रणाली का खुलासा हमारे सामने कर दिया।

बर्टोल्ट ब्रेख़्ट:-

बावेरिया, जर्मनी में जन्मे बर्टोल्ट ब्रेख़्ट [10 फ़रवरी 1898-14 अगस्त 1956]बीसवीं सदी के उन साहित्यकारों में हैं जिन्होंने पूरी दुनिया पर अपना असर छोड़ा है। वे नाटककार, कवि और नाट्य-निर्देशक थे। पूर्वी और हिन्दुस्तानी परम्पराओं से प्रेरणा ले कर उन्होंने समूचे नाट्य-कर्म को अपनी नयी शैली से प्रभावित किया। बीस-बाईस साल की उमर से वे एक प्रतिबद्ध मार्क्सवादी बन गए और फिर जीवन भर मार्क्सवादी रहे। उन्होंने दो-दो महायुद्धों की विभीषिका नज़दीक से देखी थी और हिट्लर और उसकी नात्सी पार्टी की हिट-लिस्ट में रहे जिसकी वज़ह से उन्हें दस साल से ज़्यादा की जलावतनी से गुज़रना पड़ा। ब्रेख़्ट कहते थे कि वे कविताएँ प्रकाशित करने के लिए नहीं, बल्कि अपने नाटकों को और बेहतर बनाने के लिए लिखते थे। लेकिन उनका काव्य-भण्डार जिसमें 500 से ज़्यादा कविताएँ हैं बज़ातेख़ुद एक अहमियत रखता है। इसके अलावा उन्होंने उपन्यास और कुछ कहानियाँ भी लिखी हैं और नाट्य प्रस्तुतियों पर वैचारिक लेख भी।

अपनी विलक्षण प्रतिभा से उन्होंने यूरोपीय रंगमंच को यथार्थवाद के आगे का रास्ता दिखाया। बर्तोल्त ब्रेख्त मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित थे। इसी ने उन्हें 'समाज' और 'व्यक्ति' के बीच के अंतर्संबंधों को समझने नया रास्ता सुझाया। यही समझ बाद में 'एपिक थियेटर' जिसकी एक प्रमुख सैद्धांतिक धारणा 'एलियनेशन थियरी' (अलगाव सिद्धांत) या 'वी-इफैक्ट' है जिसे जर्मन में 'वरफ्रेमडंग्सइफेकेट' (Verfremdungseffekt) कहा जाता है।ब्रेख्त का जीवन फासीवाद के खिलाफ संघर्ष का जीवन था। इसलिए उन्हें सर्वहारा नाटककार माना जाता है। ब्रेख्त की मृत्यु 1956 में बर्लिन (जर्मनी) में हुई।

एपिक थियेटर और एलियनेशन का सिद्धांत :-

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में जब यूरोपीय रंगमंच यथार्थवाद से आक्रांत था, स्तानिस्लावस्की के मेथड ने रंगकर्मियों को जकड़ रखा था, तब ब्रेख्त के सिद्धांतो और रंग प्रयोगों ने यथार्थवाद की चूलें हिला दी थीं। ब्रेख्त ने यथार्थवाद को साजिश करार दिया, जिसमें अभिनेता और निर्देशक दर्शकों को भावुकता और सम्मोहन में जकड़कर उन्हें नाट्य स्थितियों में अपने साथ बहा ले जाते थे। इस प्रक्रिया में दर्शकों के लिये यह अवकाश नहीं था कि वे चैतन्य मस्तिष्क होकर स्थितियों का विषण कर सकें। ब्रेख्त के लिये नाटक का मतलब वह था, जिसमें नाटक प्रेक्षागृह से निकलने के बाद दर्शक के मन में शुरू हो। उन्होंने नाटक को एक राजनीतिक अभिव्यक्ति माना, जिसका काम मनोरंजन के साथ शिक्षा भी था।

ब्रेख्त नाटक को प्रदर्शन की तरह देखना चाहते थे, यथार्थ की तरह नहीं। वे चाहते थे कि अभिनेता, अभिनेता की तरह लगे, चरित्र की तरह नहीं। इसी धारणा ने अभिनय के ऐलियनेशन सिद्धांत को जन्म दिया, जिसमें अभिनेता चरित्र से दूर रहकर अभिनय करता था। वह एक साथ चरित्र भी था और उसका आलोचक या व्याख्याकार भी। चरित्र से अलग रहकर अभिनय करने से चरित्र के अंतर्विरोध उजागर होते थे। इसी लिये उन्होंने अभिनेता को चरित्र के मनोवैज्ञानिक व्यवहार की जगह सामाजिक व्यवहार को खोजने की हिदायत दी।

गौरतलब है कि ब्रेख्त ने अपने सिद्धांत एशियाई परंपरा से प्रभावित होकर गढ़े थे। 1935 में ब्रेख्त को चीनी अभिनेता लेन फेंग का अभिनय देखने का अवसर रूस में मिला, जहां हिटलर के दमन और अत्याचार से बचने के लिये ब्रेख्त ने शरण ली थी। फेंग के अभिनय से प्रभावित होकर ब्रेख्त ने कहा कि जिस चीज की वे वर्षो तक विफल तलाश करते रहे, अंतत: उन्हें वह लेन फेंग के

अभिनय में मिल गई। ब्रेख्त के सिद्धांत निर्माण का यह प्रस्थान बिंदु है। इस प्रदर्शन में उन्होंने देखा कि अभिनेता कैसे यथार्थवादी रंग उपकरणों के बिना अपनी शारीरिक मुद्राओं, भंगिमाओं से नाटक के प्रसंगों की अविस्मरणीय और भावपूर्ण प्रस्तुति कर रहे हैं। ब्रेख्त अपने जीवन में संकट से घिरने के बाद भी सक्रिय रहे। रंगमंच की ताकत और उसके प्रभाव को समझकर ही उन्होंने एलियनेशन सिद्धांत का विकास किया और एपिक थियेटर की नींव रखी।

'अलगाव सिद्धांत' बर्तोल्त ब्रेख्त के 'एपिक थियेटर' के संदर्भ में ही अपनी व्याख्या प्रस्तुत करता है। उन्होंने 1936 में एक निबंध 'एलियनेशन इफेक्ट इन चाइनीज एक्टिंग' नाम से लिखा। इसी निबंध में 'एलियनेशन इफेक्ट' पर विचार करने के अलावा इस बात को रेखांकित किया कि नाटक में क्रांतिकारी रूपरेखा को अभिव्यक्त करने की कितनी संभावनाएँ मौजूद हैं। ब्रेख्त ने इस पर भी विचार किया कि कोई दर्शक किसी नाटक को देखने के बाद किस तरह से और क्यों अपने समाज में एक निश्चित दिशा में प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। बर्तोल्त ब्रेख्त पर मार्क्सवादी विचारधारा का सधन प्रभाव रहा है। इस प्रभाव ने उन्हें 'समाज' और 'व्यक्ति' के बीच के अंतर्संबंधों को समझने की नवीन पद्धति दी। दरअसल, इस पद्धति की ही आवाज 'एपिक थियेटर' है जिसका एक प्रमुख सैद्धांतिक औजार 'एलियनेशन थियरी' या 'वी-इफैक्ट' है जिसे जर्मन में 'वरफ्रेमडंग्सइफेकेट' (Verfremdungseffekt) कहा जाता है।

वी-इफैक्ट :-

(v-effect) की अवधारणा नाटक के दृश्यों को तोड़ने (Breaking) से उपजती है। इसमें ब्रेख्त की यह अवधारणा रही है कि दर्शक, जो दर्शक नहीं एक 'पर्यवेक्षक' है, नाटक को देखते हुए नाटक की घटनाओं (दृश्यों) में शामिल हो कर उससे मंत्रमुग्ध न हो जाए, वह अपने 'स्व' को, अपने 'अस्तित्व' को उसमें एकाकार न करे बल्कि नाटक देखते हुए उसे बराबर एहसास रहे कि वह नाटक से अलग हो कर नाटक को देख रहा है - एक पर्यवेक्षक की भाँति एक अवलोकनकर्ता की भाँति। उसे यह भी स्मरण रखना चाहिए कि नाटक देखने के बाद उस पर बहस-विमर्श करना है, तर्क करना है, उस पर सवाल खड़े करना है, एवं उस पर विचार करना है। इसके लिए ब्रेख्त ने नाटक 'नैरेशन' के 'फॉर्म' पर विशेष ध्यान दिया। उसने नाटक के कथा-विन्यास को असंबद्ध दृश्यों के माध्यम से तोड़ा। वह कथा-प्रवाह को नैरंतर्य में नहीं चलाना चाहता, बल्कि उसे 'ब्रेक' कर पर्यवेक्षक में देखे गए दृश्यों के प्रति विचार उत्पन्न करना चाहता है। इस कारण से 'एपिक थियेटर' का हरएक दृश्य स्वयं में स्वतंत्र और पूर्ण होता है। यही वह भरत मुनि और अरस्तू के नाटकों के दर्शक से भिन्न किस्म का दर्शक उत्पन्न करना चाहता है। इसके लिए यह आवश्यक है कि दर्शक पर्यवेक्षक के रूप में रूपायित हो जाए। वस्तुत:' एलियनेशन इफेक्ट' मुख्य रूप से दर्शक पर विचार करता है 'एपिक थियेटर' कथा-विन्यास के 'नैरेशन फार्म' व उसके खंडन पर।

'एलियनेशन इफेक्ट' असल में एक सजग आलोचकीय अवलोकनकर्ता की सुदृढ़ दृष्टि बनने की प्रक्रिया को रेखांकित करता है। इस सुदृढ़ दृष्टि के लिए ब्रेख्त ने रंगमंच से 'फोर्थ वॉल' की अवधारणा को नकारा। 'चौथी दीवार' (रंगमंच पर सामने का पर्दा) वस्तुत: दर्शक और अभिनेता के बीच एक भ्रम जाल फैलाता है, वह दर्शक की वास्तविक दुनिया से अभिनेता की वास्तविक दुनिया को अलग करता है। ब्रेख्त इस दीवार को हटा कर अभिनेता की दुनिया की वास्तविक स्थिति को दर्शक के सामने लाना चाहता है जहाँ दर्शक अभिनेता के अभिनय एवं उसके द्वारा किए जा रहे अभिनय की तैयारी को देख सके। इसके पीछे ब्रेख्त का मंतव्य यह रहा है कि अभिनेता को हरदम एहसास रहे कि वह नाटक कर रहा है और लोग उसके अभिनय को देख रहे हैं। साथ ही, दर्शक सजगता से दखते हुए हरदम यह एहसास रखे कि वह एक रंगमंचीय घटनाओं को देख रहा है। अभिनेता 'स्व अस्तित्व' को अभिनेता के अस्तित्व से अलग हो कर अपनी पहचान रखे और दर्शक अभिनेता के अस्तित्व से स्वयं को पृथक रखे। दोनों में व्यक्तिगत सजगता अनिवार्य है। तात्पर्य यह कि ब्रेख्त ने 'एलियनेशन इफेक्ट' को नाटक के आवश्यक औजार के रूप में इस्तेमाल करने की वकालत की।

ब्रेख्त और मार्क्सवाद :- ब्रेख्त के चिंतन के पीछे बर्तोल्त ब्रेख्त की एक निश्चित राजनीतिक व वैचारिक दृष्टि थी - वह दृष्टि थी मार्क्सवाद की।उनकी निम्न रचना को पढ़ने पर यह बात पूर्ण रुपेण स्पष्ट हो जाती है। यह ब्रेख्त द्वारा रची गई एक कविता है जिसका शीर्षक है - यह क्या हो गया है?

यह क्या हो गया है? (What has happened?)

उद्योगपति अपने हवाईजहाज की मरम्मत करवा रहा है।
पादरी सोच रहा है कि आठ हफ्ते पहले अपने प्रवचन में उसने दान के बारे में क्या कहा था।

फौज़ी अफसर वर्दी उतार कर सादे कपड़ों में बैंक क्लर्कों की तरह दिखाई दे रहे हैं।
सरकारी अधिकारी दोस्ताना व्यवहार कर रहे हैं।
पुलिसवाला कपड़े की टोपी पहने आदमी को रास्ता दिखा रहा है।
मकान-मालिक यह देखने आया है कि नल में पानी आ रहा है या नहीं।
पत्रकार जनता शब्द का इस्तेमाल अधिक कर रहे हैं।
गायक मुफ्त में गाना गा रहे हैं।
जहाज का कप्तान नाविकों के खाने का जायजा ले रहा है।
कार मालिक अपने ड्राइवर की बगल में बैठ रहे हैं।
डॉक्टर बीमा कंपनियों पर मुकदमा ठोंक रहे हैं।
विद्वान अपनी खोजों को दिखाकर अपने तमगों को छिपा रहे हैं।
किसान बैरक तक आलू पहुँचा रहे हैं।
क्रांति ने अपनी पहली लड़ाई जीत ली है।
यही तो हुआ है।

इसी प्रकार हम ब्रेख्त के नाटकों मे भी मार्क्सवादी दृष्टिकोण को देख सकते हैं। खास कर के निम्न तीन नाटकों में –

- सैंट जोन ऑफ द स्टोकयार्ड
- द राइज़ अँड फॉल ऑफ द सिटी ऑफ महगोन्नी
- द कौकसियन चाक सर्कल

-:उपसंहार :-

यथार्थवादी मंच को नकार कर प्रतियथार्थ या आभासात्मक रंगमंच को उभार कर महकाव्यात्मक रंगमंच ब्रेख्त की देन है ।सामाजिक सरोकार और प्रतिबद्धता इस शैली की विशेषता है। विश्व के हर एक आम आदमी को एक अच्छी जीवन पद्धति मिले, उसकी मूलभूत आवश्यकताएँ पूर्ण हो, वह अपनी मूलभूत स्वतंत्रता का उपयोग कर सके तथा सभी प्रकार के शोषण और दमन का प्रतिरोध करे। इस हेतु लोगों में वैचारिक जागरूकता लाना, लोगों को समस्याओं के प्रति संवेदनशील बनाना ब्रेख्त के अलगाव सिद्धान्त का मुख्य उद्देश्य था। परंपरागत यथार्थवादी नाटक जो दर्शकों को भाव विभोर कर देते है तथा उनका भाव विरेचन कर देते है और सोचने विचर करने की क्षमता को खत्म कर देते हैं इनका विरोध ब्रेख्त ने किया।

संदर्भ ग्रंथ :-

- कामरेड कविता कृष्णन : मार्क्सवाद और हमारा समाज
- मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य : डॉ राम विलास शर्मा ;वाणी प्रकाशन
- भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धान्त : गणपति चंद्र गुप्त ; लोकभारती प्रकाशन
- रंगमंच के सिद्धान्त : महेश आनंद, देवेंद्र राज अंकुर ; राजकमल प्रकाशन